

कपीराइट र जानकारी:  
© 2001 Project WorldReach © 2001 SEAN  
सर्वाधिकार सुरक्षित

**Train & Multiply®**  
Project WorldReach (टि एम सेवकाइ संचालन)  
Dr. George Patterson (मौलिक लेखक)  
SEAN International



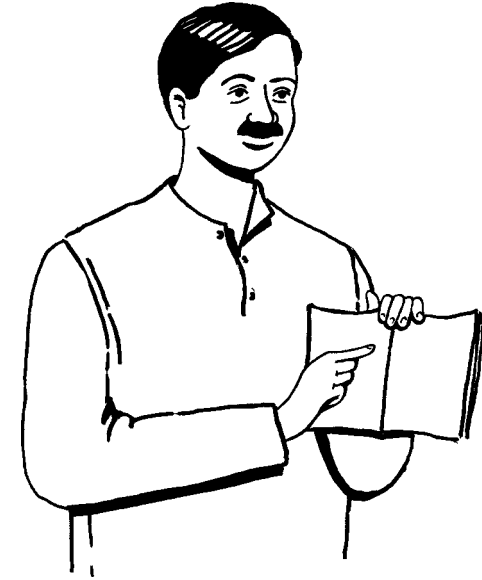
सम्पर्क ठेगाना: **Project WorldReach PWR®**

474 - 800 - 15355 - 24th Ave  
Surrey BC, Canada  
V4A 2H9

ईमेल: [pwr@trainandmultiply.com](mailto:pwr@trainandmultiply.com)

वेबसाइट: <http://www.trainandmultiply.com>

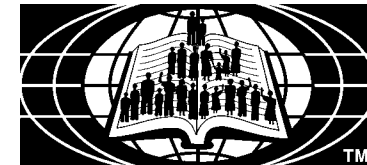
# बाइबल अध्ययन कसरी गर्ने



पाष्टरीय तालीम पुस्तिका

१४

तालीम र वृद्धि



T&M®



परमेश्वरले हामीलाई उहाँको वचन बुझ्ने बुद्धि देऊन् भनी हामी उहाँसंग प्रार्थना गरौं ।

## बाइबल के हो ?

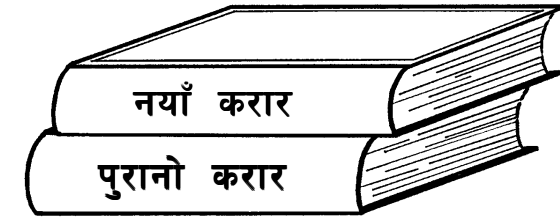
बाइबल परमेश्वरको वचन हो । यो परमेश्वरको आत्माद्वारा प्रेरित भएर अगमवक्ता अनि अरु लेखकहरूले लेखेका हुन् । लगभग ४० लेखकहरूले लेखेका हुन् ।

६६ वटा पुस्तकहरूमध्ये, पुरानो करारको ३९ वटा, अनि नयाँ करारको २७ वटा । पुरानो करार (नियम) भन्नाले परमेश्वरले इस्राएल राष्ट्रसित गर्नुभएको करार बुझिन्छ । (प्रस्थान २४:६-८) करार भन्नाले सम्झौता भन्ने बुझिन्छ । नयाँ करार (नियम) चाहिँ परमेश्वरले इसाईहरूसित गर्नुभएको नयाँ करार अर्थात् सम्झौता भन्ने बुझिन्छ । (हिब्रू ९:१५)

|           |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|-----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ पत्रुस  | १  | २  | ३  | ४  | ५  |    |    |    |    |    |
| २ पत्रुस  | १  | २  | ३  |    |    |    |    |    |    |    |
| १ यूहन्ना | १  | २  | ३  | ४  | ५  |    |    |    |    |    |
| २ यूहन्ना | १  |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
| ३ यूहन्ना | १  |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
| यहूदा     | १  |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
| प्रकाश    | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|           | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|           | २१ | २२ |    |    |    |    |    |    |    |    |



|               |    |    |    |   |   |   |   |   |   |    |
|---------------|----|----|----|---|---|---|---|---|---|----|
| २ कोरन्थी     | १  | २  | ३  | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
|               | ११ | १२ | १३ |   |   |   |   |   |   |    |
| गलाती         | १  | २  | ३  | ४ | ५ | ६ |   |   |   |    |
| एफिसी         | १  | २  | ३  | ४ | ५ | ६ |   |   |   |    |
| फिलिप्पी      | १  | २  | ३  | ४ |   |   |   |   |   |    |
| कलस्सी        | १  | २  | ३  | ४ |   |   |   |   |   |    |
| १ थिस्सलोनिकी | १  | २  | ३  | ४ | ५ |   |   |   |   |    |
| २ थिस्सलोनिकी | १  | २  |    |   |   |   |   |   |   |    |
| १ तिमोथी      | १  | २  | ३  | ४ | ५ | ६ |   |   |   |    |
| २ तिमोथी      | १  | २  | ३  | ४ |   |   |   |   |   |    |
| तीतस          | १  | २  | ३  |   |   |   |   |   |   |    |
| फिलेमोन       | १  |    |    |   |   |   |   |   |   |    |
| हिब्रू        | १  | २  | ३  | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
|               | ११ | १२ | १३ |   |   |   |   |   |   |    |
| याकूब         | १  | २  | ३  | ४ | ५ |   |   |   |   |    |



बाइबलमा हामी व्यवस्था, इतिहास, अगमवाणी, खीष्टको जीवनी, अनि नयाँ मण्डलीहरुलाई पत्रहरु पाउँदछौं । सम्पूर्ण बाइबलको केन्द्रीय विषय-वस्तु चाहिँ प्रभु येशू खीष्ट हुन् ।

बाइबलको सन्देश एकै पदमा सारांशको रुपमा प्रस्तुत गरि एको छ :

“किनभने परमेश्वरले संसारलाई यस्तो प्रेम गर्नुभयो, कि उहाँले आफ्ना एकमात्र पुत्र दिनुभयो, ताकि उहाँमाथि विश्वास गर्ने कोही पनि नाश नहोस्, तर त्यसले अनन्त जीवन पाओस् ।”  
(यूहन्ना ३:१६)

बाइबलमा “नियम” शब्दको अर्थ:

- ☐ एक आत्मिकी प्रयोग
- ☐ एक दृढ सम्झौता

बाइबल परमेश्वरद्वारा प्रेरित भएको हो । परमेश्वर पवित्र आत्माले यसका लेखकहरुलाई अगुवाइ गर्नुभयो । उनीहरुले कुनै भूलरहित लेखे । बाइबल परमेश्वरको वचन हो - परमेश्वरले हामीलाई जे भन्न चाहनुहुन्छ त्यो यही हो ।

बाइबलमा रहष्यात्मक कुराहरु छन्, तर यो कुनै जादू अथवा ज्योतिषीको पुस्तक होइन । यो अति नै व्यावहारिक छ । हरेक पदचांशमा नै रहष्य खोज्ने काम चाहिँ नगरौं । जे स्पष्ट छ त्यसमाथि मनन गरौं अनि पालन गरौं । बाइबल सररर पल्टाएर, फाटफूट पदहरु छानेर, सन्दर्भदेखि बाहिर रहेर अगुवाइ खोज्ने काम नगरौं ।

पुरानो संस्करणको बाइबलबाट बुझ्न सक्नुहुन्न भने, हालैको अनुवादहरुबाट हेर्नुहोला ।

बाइबलको केन्द्रीय विषय-वस्तु खीष्ट हो । किन ?

|            |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| जकरिया     | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|            | ११ | १२ | १३ | १४ |    |    |    |    |    |    |
| मलाकी      | १  | २  | ३  | ४  |    |    |    |    |    |    |
| मत्ती      | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|            | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|            | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |    |    |
| मर्कस      | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|            | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |    |    |    |    |
| लूका       | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|            | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|            | २१ | २२ | २३ | २४ |    |    |    |    |    |    |
| यूहन्ना    | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|            | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|            | २१ |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
| प्रेरित    | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|            | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|            | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ |    |    |
| रोमीहरुलाई | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|            | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |    |    |    |    |
| १ कोरन्थी  | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|            | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |    |    |    |    |

|         |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| इजकिएल  | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|         | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|         | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|         | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० |
|         | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ |    |    |
| दानिएल  | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|         | ११ | १२ |    |    |    |    |    |    |    |    |
| होशे    | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|         | ११ | १२ | १३ | १४ |    |    |    |    |    |    |
| योएल    | १  | २  | ३  |    |    |    |    |    |    |    |
| आमोस    | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  |    |
| ओबदिया  | १  |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
| योना    | १  | २  | ३  | ४  |    |    |    |    |    |    |
| मीका    | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  |    |    |    |
| नहूम    | १  | २  | ३  |    |    |    |    |    |    |    |
| हबक्कूक | १  | २  | ३  |    |    |    |    |    |    |    |
| सपन्याह | १  | २  | ३  |    |    |    |    |    |    |    |
| हाग्वै  | १  | २  |    |    |    |    |    |    |    |    |

बाइबलको प्रेरणाले के बुझाउँछ ?

☐ यसको रहस्य

☐ लेखकहरुलाई परमेश्वरको अगुवाई

परमेश्वर स्वयंले जे चाहनुभएको छ त्यही नै बाइबलका शब्दहरु हुन् ।

## बाइबलमा पदहरु कसरी भेटाउनु ?

आराधना सेवाहरु अनि बाइबल अध्ययनको बेला हामी सधैं पदहरु खोज्छौं । नयाँ विश्वासीहरुलाई ती पदहरु पाउन सहायता गर्नुस् । उनीहरुलाई पदहरु भेटाउन कसरी सिकाउने, यहाँ एक उदाहरण दिइएको छ ।

हामी १ पत्रुस २:२ प्रयोग गर्नेछौं ।

१ पत्रुस पुस्तक

२ चाहिँ अध्याय

:२ चाहिँ पद हो

- सर्वप्रथम बाइबलको शुरुमा सूचीपत्र हेरी त्यहाँबाट १ पत्रुस पुस्तक भेटाउनुोस् । यहाँ तपाईंले १ पत्रुस कहाँ पाइन्छ, भनी पृष्ठ संख्या पनि पाउनुहुनेछ । यही पृष्ठ पल्टाएर यो पुस्तक भेटाउन सकिन्छ । त्यसपछि, अध्याय २ खोज्नुोस् ।

- अध्यायहरु बाइबलमा ठूला ठूला अक्षरले लेखिएको हुन्छ । ठूलो अक्षरले लेखिएको २ मा अडिनुहोस् ।

- जब तपाईंले अध्यायको निम्ति २ पाउनुहुनेछ, तबसानो अक्षरमा लेखिएको २ खोज्नुोस् । पदको २ संख्या यही हो ।

भजन १९:७-११ पढ्नुोस् अनि मनन गर्नुोस् ।

☐ जब पढिसक्नुहुन्छ, यो बक्समा दाग लाउनुोस् ।

|            |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| हितोपदेश   | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|            | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|            | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|            | ३१ |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
| उपदेशक     | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|            | ११ | १२ |    |    |    |    |    |    |    |    |
| श्रेष्ठगीत | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  |    |    |
| यशैया      | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|            | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|            | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|            | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० |
|            | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० |
|            | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० |
|            | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ |    |    |    |    |
| यर्मिया    | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|            | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|            | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|            | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० |
|            | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० |
|            | ५१ | ५२ |    |    |    |    |    |    |    |    |
| विलाप      | १  | २  | ३  | ४  | ५  |    |    |    |    |    |

|           |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |
|-----------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| एजा       | १   | २   | ३   | ४   | ५   | ६   | ७   | ८   | ९   | १०  |
| निहेम्याह | १   | २   | ३   | ४   | ५   | ६   | ७   | ८   | ९   | १०  |
|           | ११  | १२  | १३  |     |     |     |     |     |     |     |
| एस्तर     | १   | २   | ३   | ४   | ५   | ६   | ७   | ८   | ९   | १०  |
| अय्यूब    | १   | २   | ३   | ४   | ५   | ६   | ७   | ८   | ९   | १०  |
|           | ११  | १२  | १३  | १४  | १५  | १६  | १७  | १८  | १९  | २०  |
|           | २१  | २२  | २३  | २४  | २५  | २६  | २७  | २८  | २९  | ३०  |
|           | ३१  | ३२  | ३३  | ३४  | ३५  | ३६  | ३७  | ३८  | ३९  | ४०  |
|           | ४१  | ४२  |     |     |     |     |     |     |     |     |
| भजनसंग्रह | १   | २   | ३   | ४   | ५   | ६   | ७   | ८   | ९   | १०  |
|           | ११  | १२  | १३  | १४  | १५  | १६  | १७  | १८  | १९  | २०  |
|           | २१  | २२  | २३  | २४  | २५  | २६  | २७  | २८  | २९  | ३०  |
|           | ३१  | ३२  | ३३  | ३४  | ३५  | ३६  | ३७  | ३८  | ३९  | ४०  |
|           | ४१  | ४२  | ४३  | ४४  | ४५  | ४६  | ४७  | ४८  | ४९  | ५०  |
|           | ५१  | ५२  | ५३  | ५४  | ५५  | ५६  | ५७  | ५८  | ५९  | ६०  |
|           | ६१  | ६२  | ६३  | ६४  | ६५  | ६६  | ६७  | ६८  | ६९  | ७०  |
|           | ७१  | ७२  | ७३  | ७४  | ७५  | ७६  | ७७  | ७८  | ७९  | ८०  |
|           | ८१  | ८२  | ८३  | ८४  | ८५  | ८६  | ८७  | ८८  | ८९  | ९०  |
|           | ९१  | ९२  | ९३  | ९४  | ९५  | ९६  | ९७  | ९८  | ९९  | १०० |
|           | १०१ | १०२ | १०३ | १०४ | १०५ | १०६ | १०७ | १०८ | १०९ | ११० |
|           | १११ | ११२ | ११३ | ११४ | ११५ | ११६ | ११७ | ११८ | ११९ | १२० |
|           | १२१ | १२२ | १२३ | १२४ | १२५ | १२६ | १२७ | १२८ | १२९ | १३० |
|           | १३१ | १३२ | १३३ | १३४ | १३५ | १३६ | १३७ | १३८ | १३९ | १४० |
|           | १४१ | १४२ | १४३ | १४४ | १४५ | १४६ | १४७ | १४८ | १४९ | १५० |

## किन हामीले बाइबल अध्ययन गर्नुपर्ने ?

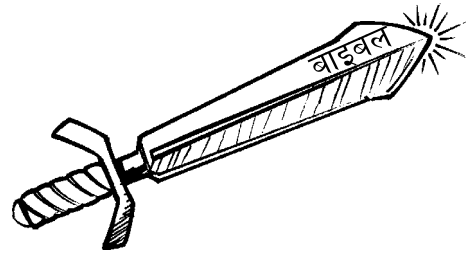
परमेश्वर हामीसँग बाइबलबाट बोल्नुहुन्छ । धेरै कारणहरूले गर्दा हामी यसको अध्ययन गर्दछौं:

- बाइबलले हामीलाई धार्मिकतामा निर्देशन दिँदछ ।  
पञ्चदश(पञ्चदश)  
☐ २ तिमोथी ३:१६-१७ पढ्नुस् ।

बाइबलले हामीलाई भनेको हरेक कुरा सत्य छ । हामी यसैद्वारा हाम्रो जीवनमाथि शासन गर्दछौं । यसको उद्देश्य छ: “कि परमेश्वरको जन सिद्ध हरेक असल कामको निम्ति सुसज्जित र होऊन् ।”

- बाइबल दुष्टताको विरुद्ध हाम्रो हतियार हो । (पञ्चदश)  
☐ एफिसी ६:१२-१७ अनि हिब्रू ४:१२ पढ्नुस् ।

हाम्रो संघर्ष दुष्ट  
आत्माहरुको विरुद्धमा  
छ। यसको निम्ति  
हामीलाई परमेश्वरको  
हतियार चाहिन्छ।



हाम्रो तरवार परमेश्वरको वचन हो (एफिसी ६:१७)।  
यसको शक्ति छ, किनकि यो ता परमेश्वर स्वयंले  
बोल्नुभएको हो।

३. प्रभु येशूले निरन्तर बाइबलबाट पदहरु उद्धृत गर्नुभयो,  
विशेष गरी जब उहाँ शैतानबाट परीक्षामा पर्नुभयो। (मत्ती ४:४,७,१०)

४. बाइबलले हामीलाई आशा दिलाउँछ।  
□ रोमी १५:४ अनि १ यूहन्ना ५:१३ पढ्नुस्।

बाइबलले परमेश्वरका धेरै जनहरुको जीवनबाट  
नमूनाहरु हामीलाई दिएको छ। हामीसित भएको पर  
मेश्वरको धैर्यलाई हामी देख्नसक्छौं, अनि हामी जब  
मर्दछौं, हामी उहाँसित रहनसक्छौं भनेर जान्दछौं।

|               |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|---------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| न्यायकर्ताहरु | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|               | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|               | २१ |    |    |    |    |    |    |    |    |    |

|         |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| रुथ     | १  | २  | ३  | ४  |    |    |    |    |    |    |
| १ शमूएल | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|         | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|         | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|         | ३१ |    |    |    |    |    |    |    |    |    |

|         |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २ शमूएल | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|         | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|         | २१ | २२ | २३ | २४ |    |    |    |    |    |    |

|           |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|-----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ राजाहरु | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|           | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|           | २१ | २२ |    |    |    |    |    |    |    |    |

|           |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|-----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २ राजाहरु | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|           | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|           | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ |    |    |    |    |    |

|          |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| १ इतिहास | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|          | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|          | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |    |

|          |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| २ इतिहास | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|          | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|          | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|          | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ |    |    |    |    |



|          |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| उत्पत्ति | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|          | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|          | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|          | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० |
|          | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० |

|          |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| प्रस्थान | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|          | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|          | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|          | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० |

|      |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| लेवी | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|      | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|      | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ |    |    |    |

|       |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|-------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| गन्ती | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|       | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|       | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|       | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ |    |    |    |    |

|          |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|----------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| व्यवस्था | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|          | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|          | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|          | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ |    |    |    |    |    |    |

|       |    |    |    |    |    |    |    |    |    |    |
|-------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| यहोशू | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० |
|       | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|       | २१ | २२ | २३ | २४ |    |    |    |    |    |    |

सबैभन्दा मुख्य कुरा, बाइबलद्वारा पवित्र आत्माले हामीलाई ज्योतिर्मय बनाउनुहुन्छ अनि प्रभु येशू ख्रीष्टको व्यक्तित्वलाई जान्न सहायता गर्नुहुन्छ ।

## नयाँ करारका पुस्तकहरूले केको बारेमा सिकाउँछ ?

नयाँ करार सुसमाचारहरूबाट शुरु भएको छः मत्ती, मार्कस, लूका र यूहन्ना । यी सबै नयाँ करारका आधार हुन् । तिनीहरूले यस पृथ्वीमा ख्रीष्टले जिउनु भएको जीवन, मृत्यु र पुनरुत्थानको बारेमा बताउँछ । यिनीहरूलाई पढ्दा हामीले ख्रीष्टको बारेमा अझ राम्ररी बुझ्न सक्छौं । “सुसमाचार” को अर्थ “असल खबर” हो ।

प्रेरितको कर्मले कथालाई जारी गर्दछ । यसले प्रभुको स्वर्गारोहण पश्चात प्रेरितहरूले के के गरे त्यो बताउँछ । उनीहरूले पवित्र आत्माको सामर्थ्यमा प्रथम मण्डलीहरू स्थापित गरे ।

त्यसपछि, पत्रहरु छन् । आफूहरुले शुरु गरेका मण्डलीहरु अनि इसाईहरुलाई लक्ष्य गरेर प्रेरितहरुले यी पत्रहरु लेखेका थिए ।

यदि हामीले सुसमाचारहरु र प्रेरितका पुस्तकहरु पहिला पढेका छौं भने हामी पत्रहरु राम्रोसँग बुझ्न सक्छौं । प्रकाश चाहिँ अन्तिम पुस्तक हो । यसले भविष्यको बारेमा अगमवाणीहरु गरेको छ ।

## नयाँ करारलाई चार भागमा विभाजन गरिएको छ

### १. सुसमाचारहरु:

|       |         |
|-------|---------|
| मत्ती | मर्कूस  |
| लूका  | यूहन्ना |

### २. प्रथम मण्डलीको इतिहास:

प्रेरित

यदि हरेक साताका ६ दिनभित्र तीन अध्यायहरु अनि हरेक आइतबार पाँच अध्यायहरु पढ्नु भयो भने एक वर्षभित्र बाइबल पढिसिध्याउन सकिन्छ । त्यति धेरै एकै पटक पढ्न तपाईंलाई गाढो पर्ला । यदि पछाडिनु भयो भने पन तपाईं निरास नबन्नोस्, किनकि एक वर्षमा सिध्याउनै पर्छ भन्ने कुनै व्यवस्था छैन ! मुख्य कुरो चाहिँ के हो भने तपाईंको मन वचनमा केन्द्रित रहेको होस् । नयाँ विश्वासीहरुलाई नयाँ करारका सुसमाचारहरु, मत्ती, मर्कूस, लूका अनि यूहन्नाबाट पढ्नको निम्ति सल्लाह दिने गरिन्छ । त्यसपछि, नयाँ करार का अरु पुस्तकहरु पढ्नु होस अनि पुरानो करारका अरु पुस्तकहरु पनि जस्तै भजन, उत्पत्ति, प्रस्थान, यशैया, इत्यादि, मिलाएर पढ्नोस् ।

यदि तपाईंले हरेक दिन सात अध्यायहरु पढ्नुभयो, तपाईंले ६ महिनाभन्दा कमिमा पढिसिध्याउनु हुन्छ ।

जुन अध्यायहरु पढिसिध्याउनुहुन्छ त्यसमा ह चिन्ह लगाउनुोस् ।

- तपाईंका मानिसहरुलाई दिनहुँ प्रार्थनासहित बाइबल पढ्न र प्रयोग गर्न सहयोग गर्नुस् ।
- तपाईंका मानिसहरुलाई बाइबल राम्ररी जान्न सिकाउनुस्:
  - बाइबल के हो भनेर ।
  - यसको प्रेरणा बारेमा ।
  - खण्डहरु कसरी भेटाउनु ।
  - किन हामीले यसलाई अध्ययन गर्नु ?
  - पुरानो र नयाँ करारका विभाजनहरु ।
  - बाइबल पढ्नुभन्दा अघि हामीले किन प्रार्थना गर्नु ।
  - निरीक्षण
  - व्याख्या
  - प्रयोग

## बाइबल अध्ययन चार्ट

सबै बाइबल क्रमैसित पढ्न तपाईंलाई सहायता पुगोस् भनेर हामीले निम्नअनुसारको बाइबल अध्ययन चार्ट तयार पारेका छौं ।

## ३. प्रेरितहरुद्वारा लेखिएका पत्रहरु:

|                   |                  |
|-------------------|------------------|
| रोमीहरुलाई        | १ र २ कोरन्थी    |
| गलाती             | एफिसी            |
| फिलीप्पी          | कलस्सी           |
| १ र २ थिस्सलोनिकी | १ र २ तिमोथी     |
| तीतस              | फिलेमोन          |
| हिब्रू            | याकूब            |
| १ र २ पत्रुस      | १, २ र ३ यूहन्ना |

## ४. अगमवाणी:

प्रकाश

## पुरानो करारको पनि चारवटा विभाजनहरु छन्

## १. मोशाका व्यवस्था

|          |          |
|----------|----------|
| उत्पत्ति | प्रस्थान |
| लेवी     | गन्ती    |

व्यवस्था

(यिनीहरुलाई “पञ्चपुस्तक” भनिन्छ, जसको अर्थ हुन्छ, “पाँच पुस्तकहरु”)

## २. प्रतिज्ञाको भूमिमा परमेश्वरका जनहरुको इतिहास:

|               |                       |
|---------------|-----------------------|
| यहोशू         | न्यायकर्ताहरु         |
| रुथ           | १ र २ शमूएल           |
| १ र २ राजाहरु | १ र २ इतिहास          |
| एज्रा         | ण्जद्व(ण्ठघ निहेम्याह |
| एस्तर         |                       |

## ३. कविता:

|            |        |
|------------|--------|
| अय्यूब     | ण्जद्व |
| हितोपदेश   | उपदेशक |
| श्रेष्ठगीत |        |

## ३. अगमवाणी:

|                                                     |         |
|-----------------------------------------------------|---------|
| यशैया                                               | यर्मिया |
| विलाप                                               | इजकिएल  |
| दानिएल                                              |         |
| अनि अरु बाइबल साना अगमवक्ताहरु (होशेदेखि मलाकीसम्म) |         |

दोस्रो, हामीले यसलाई कसरी व्याख्या गर्दछौं ?

---

उत्तर: यसको अर्थ के हो भनी हामी छुट्याउँछौं । हामी यी कुरा पत्ता लाउँछौं: यो कसले लेख्यो ? कहाँ ? कहिले ? को देखा पर्छन् ? कसकौ बारैमा ? किन ?

तेस्रो, कसरी हामी यसलाई प्रयोग गर्दछौं ?

---

उत्तर: यस बारेमा हामीले के गरेको परमेश्वर चाहनुहुन्छ, हामी देखाउने छौं ।

## अभ्यासका कामहरु

- बाइबल क्रमैसित, दिनहुँ एक वा दुइ अध्याय गरी पढ्नुस् । तपाईंले पढ्नु भएको भागलाई चिन्ह लगाइर राख्नुस् ।

४. इसाईहरु नयाँ करारका हुन् । यसैकारण, हामीले नयाँ करारलाई जत्तिकै गरेर पुरानो करारलाई प्रयोग गर्दैनौं । कसरी हामीले पुरानो करारलाई प्रयोग गर्ने हो ?

☐ यो ता पुराना मानिसहरुको निम्ति मात्र भएको कारण हामीले यसलाई भुलिदिए पनि हुन्छ ।

☐ हामीले यसलाई नयाँ करारको प्रकाशमा पढ्न सक्छौं ।

५. हामीले के गर्नुपर्ने हो भनी नयाँ करारले स्पष्टसँग भन्दछ, अनि हामीलाई पुरानो करार बुझ्नमा सहायता गर्दछ ।

### हामी निरीक्षण, व्याख्या अनि प्रयोग गर्दछौं

पहिलो, हामीले कुनै खण्डलाई निरीक्षण गर्दा हाम्रो जोड कैमा हुन्छ ?

उत्तर: यसले के भन्छ, त्यसैलाई हामी निरीक्षण गर्दछौं ।

याद राखौं, हामी पुरानो होइन, तर नयाँ करारको अन्तर्गत जिउँदछौं । पुरानो करार परमेश्वरको वचनको भाग नै हो अनि यसभित्र धेरै नमूनाहरु दिइएका छन् जसले हामीलाई परमेश्वरको वचन बुझाउन मदत गर्दछ । तर पनि हामी वचनलाई नयाँ करारकै अनुसार व्याख्या गर्दछौं किनकि हामी नयाँ करारकाहरु हौं ।

कतिपय भूटा पन्थीहरुले उनीहरुको शिक्षा व्यवस्थामा आधारित गरेका छन् जो अब हामीले पालन गरिरहनु पर्दैन ।

किन हामीले हाम्रो सिद्धान्त नयाँ करारमा आधारित गर्दछौं ?

---

---

---

---

---

# हामीले आफैलाई परमेश्वरको वचनमा समर्पित गर्ने एक व्यावहारिक उपाय



परमेश्वरको वचनले हाम्रो जीवनको हरेक क्षेत्रलाई छुनको निम्ति हामीले निम्न कुराहरु पालन गर्नु पर्दछः

१. यसलाई निरीक्षण गर्नुस् : यसले के भन्छ, राम्ररी हेर्नुस् / बुझ्नुस् । पञ्जद्व
२. यसलाई व्याख्या गर्नुस् : यसको अर्थलाई स्पष्ट पार्नुस् । पञ्जद्व
३. यसलाई प्रयोग गर्नुस् : यसले हामीलाई अगुवाइ गरोस् ।

## निरीक्षण

पढिएको खण्डले के भन्छ ?

निरीक्षणको बेला हामी खण्डमा भएका शब्दहरुले वास्तवमा के बताउन खोजिरहेछ, राम्ररी हेर्नेछौं । सर्वप्रथम, यस खण्डमा परमेश्वरको ज्योति परोस् भनी उहाँसंग प्रार्थना गर्नेछौं । यति गरेपछि उहाँले भन्न खोज्नु भएको कुरो हामी पाउनेछौं । उहाँको प्रकाश बिना हामीले परमेश्वरको वचन र राम्ररी बुझ्न सक्तैनौं । (१ कोरन्थी २:११-१६, एफिसी १:१८)

## सारांश जाँच

सही उत्तरमा चिन्ह लाउनुस् ।

१. बाइबल के हो :

- ☐ जादू र तान्त्रिक विद्याको पुस्तक
- ☐ परमेश्वरको प्रेरणाद्वारा लेखिएको ६६ वटा पुस्तकहरुको संकलन

२. प्रेरणाद्वारा लेखिएका यी पुस्तकहरुको केन्द्रीय विषय के हो ?

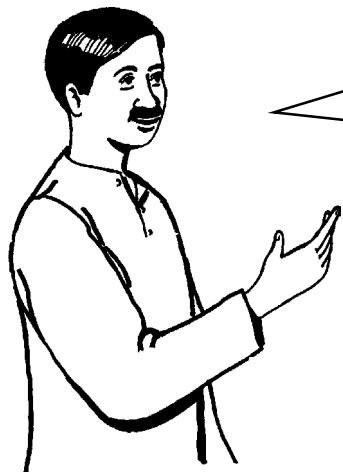
- ☐ यहूदी मानिसहरु ।
- ☐ प्रभु येशू ख्रीष्ट ।

३. येशू ख्रीष्टको बारेमा यो त्रुटीविहीन पुस्तक लेखनलाई उहाँले कुन माध्यमद्वारा प्रेरणा दिनुभयो:

- ☐ मण्डलीको बुद्धि
- ☐ पवित्र आत्मा

## व्याख्या

(मत्ती १५:३२-३९)



कथाको अर्थ के हो ? यो ता प्रस्थानमा उल्लेख भएअनुसार जब परमेश्वरले उजाडभूमिमा इस्राएलका सन्तानहरूलाई खुवाउनुभयो, त्यस्तै कुरा हो (प्रस्थान १६)। परमेश्वरले त्यसबखत गर्नुभए जस्तै येशूले यहाँ पनि गर्दै हुनुहुन्छ । उहाँले खाँचोमा परेका मानिसहरूप्रति ठूलो दया देखाउनुभएको छ ।

## प्रयोग

(मत्ती १५:३२-३९)

हामी यसलाई परमेश्वरको दया खीष्टमा ग्रहण गरेर, अनि अरुहरूलाई देखाएर प्रयोगमा ल्याउँदछौं । प्रभु येशूको प्रेम र शक्तिको यो उदाहरणलाई म सम्झनेछु । म परमेश्वरको प्रशस्त प्रबन्धमा भरोसा गर्नेछु । हाम्रो भोजन अनि हामीलाई हरेक दिन दिनुहुने प्रत्येक थोकको निम्ति म उहाँलाई धन्यवाद दिनेछु ।



“मेरा आँखाहरू खोलिदिनुहोस्, र म तपाईंको व्यवस्थाका उदेकका कुराहरू देख्न सकूँ ।” (भजन ११९:१८)

हामीले परमेश्वरको वचन पढौं भनेर हामीलाई तयार पार्नलाई कति गजबको प्रार्थना (माथि उद्धृत गरिएको) !

त्यसपछि, हामी खण्डलाई होशियारीपूर्वक पढ्दछौं, अनि यसलाई नबुझ्जेल बारम्बार पढिरहन्छौं ।

बाइबललाई ठीकसँग बुझ्नको निम्ति पहिलो नियम हो: बाइबललाई यसको सन्दर्भअनुसार अध्ययन गर्नु । (सन्दर्भ चाहिँ पढिएको पदको अघि वा पछि आउँछ, साथै ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पनि हो: कहाँ र कसरी यो हुन गयो।)

हामीले सम्पूर्ण अनुच्छेद नपढ्जेल खण्डको एक वाक्यांश पनि बुझ्न सक्दैनौं । यदि अनुच्छेद पनि बुझिन्न भने सम्पूर्ण अध्याय पढ्नुहोस् । सम्पूर्ण अध्याय बुझिन्न भने सम्पूर्ण पुस्तक पढ्नुहोस् । यति गर्दा पनि बुझ्नु भएन भने यस खण्डबाट तपाईंले सिकाउनु वा प्रचार गर्नु भएन ! जससँग

बाइबलको बढी ज्ञान छ, उसित सिकाइमाग्नोस् । भूटा पन्थहरुले उनीहरुको सिद्धान्तलाई एकलो पदहरुले पुष्टि गर्न खोज्छन्, तर तिनीहरुले पदको सन्दर्भसित मिलाएर व्याख्या गर्दैनन् । उनीहरुले पदहरुलाई सन्दर्भदेखि बाहिर लगेर परमेश्वरको वचनलाई गलत व्याख्या गर्दछन् ।

सन्दर्भको अर्थ:

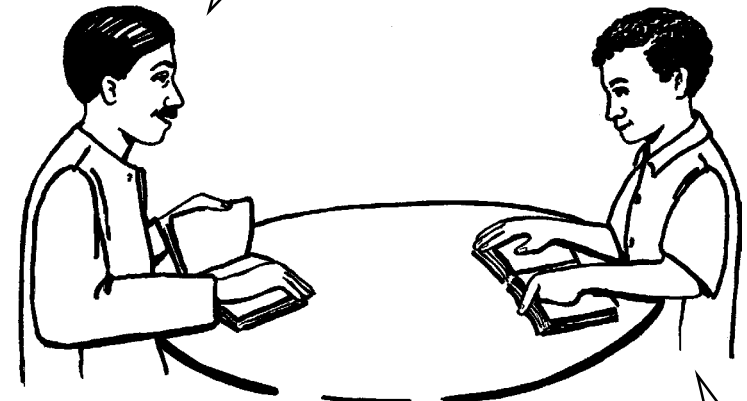
- ☐ खण्डको अधि र पछि के लेखिएको छ, अनि यसको ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के छ ।
- ☐ खण्डको आधारमा पाठकको विचार के छ ।

खण्डको वरिपरि भएको हरेक कुराले अर्थात खण्डको अधि र पछि के छ, यसको ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के हो, लेखकले किन लेखे, यी सबैले हामीलाई खण्डको महत्त्व र अर्थ बुझाउन सहयोग गर्दछ ।

जब तपाईंले एक खण्डलाई निरीक्षण गर्नुहुन्छ, तपाईंले निम्न प्रश्नहरु गर्नुहोस्:

- लेखक को हो ?

अब हामी मत्ती १५:३२-३९ हाँशियारपूर्वक पढौं ।  
तब मुख्य बुँदाहरुलाई ध्यानमा राखौस् ।



लेखक: प्रेरित मत्ती ।

कहाँ: प्रभु गालीलको समुद्र नजीकैको पहाडमा हुनुभएको बेला  
कहिले: यही ठाउँमा धेरै रोगीहरुलाई निको पार्नुभएको तीन दिन पछि (पद २क)

प्रभुले सात रोटी र केही ससाना माछाहरुबाट शुरु गर्नुभयो । उहाँले रोटीलाई प्रशस्त पार्नुभएपछि, अनि सबैले खाएपछि, सात डालाहरुभरि रोटी उब्रिएको थियो । प्रभु येशूले सात रोटी र दुई माछालाई हजारौं मानिसहरुलाई खुवाउनको निम्ति प्रशस्त पार्नुभएको थियो । खाएपछि, सात डालाभरिका खानाहरु उब्रिएको थियो ।





अब हामी बाइबलको कुनै एक खण्डलाई यी तीन तहमा ल्याएर व्यवहारमा उतारौं । कृपया गरी तपाईंको बाइबलबाट मत्ती १५:३२-३९ खोल्नुहोस् ।

## मत्ती १५:३२-३९ सित तरिकाको उदाहरण

### निरीक्षण

मत्ती १५:३२-३९

परमेश्वरले हामीलाई के भन्न चाहनुहुन्छ त्यो देख्नलाई हाम्रा आँखा खोलिऊन् भनी हामी पवित्र आत्मासंग विन्ती गरौं ।



- यो घटना कहाँ घटेको हो ?
- यो कहिले घटेको हो ?
- कुन मानिसहरु यहाँ संलग्न छन् ?
- कसको बारेमा यसले बोलिरहेको छ ?
- यो किन लेखियो ?

(हामीले बुझ्न नसकेका, अनि अरु विवरणहरुलाई हामीले विचार गर्नुपर्दछ ।)

### व्याख्या

खण्डको अर्थ के हो ?

बाइबलको खण्डमाथि हामीले प्रार्थनासहित मनन गर्नुपर्दछ । सन्दर्भअनुसार यसको अर्थ स्पष्ट पार्नको निम्ति हामीले बाइबलको अन्य पुस्तकमा लेखिएका यसै घटनाबली, बाइबलका भूमिहरुको मानचित्रहरु, बाइबल शब्दकोष अनि टिप्पणीहरुबाट हामीले सहयोग प्राप्त गर्न सक्दछौं ।

जससित बाइबलको बढी ज्ञान छ, उसित पनि हामीले सोधेर सहायता लिन सक्छौं ।

## प्रयोग

यो खण्डले हामीलाई के गर्नको निम्ति अगुवाइ गर्दैछ ?

बाइबल अध्ययनमा हाम्रो उद्देश्य परमेश्वरको वचनले हाम्रो हृदय छेड्न दिनु हो (भजन ११९:१९-११) अनि उहाँको इच्छा पूरा गर्न हामीलाई अगुवाइ गर्न दिनु हो । (याकूब १:२२)



परमेश्वरले हाम्रो चालचलन, हाम्रो नैतिकता, हाम्रो जीवनको योजना, अनि अरु मानिसहरुप्रति हाम्रो व्यवहारलाई परिवर्तन गरिदिनुहुन्छ । उहाँले प्रेम, आनन्द, शान्ति, दया अनि असल कामहरु गर्ने इच्छा उत्पन्न गरिदिनुहुन्छ ।

(२ तिमोथी ३:१६-१७)

प्रभुको र अरुहरुको सेवा गर्दै हामीले सिकेको शिक्षालाई दिनहुँ प्रयोगमा ल्याऔं । व्यवस्था ८:३ र मत्ती ४:४ ले हामीलाई सिकाउँदछ कि मानिस रोटीले मात्र होइन, तर परमेश्वरको मुखबाट निस्केको हरेक वचनबाट बाँच्दछ ।

परमेश्वरलाई जान्नु र प्रेमपूर्वक उहाँको आज्ञा पालन गर्नु नै बाइबल अध्ययनको उद्देश्य हो । (याकूब १:२२)

जब हामीले बाइबलको एक शिक्षा सिक्दछौं, अरुहरुलाई बाँड्न पाउनु हाम्रो लागि अति आनन्दकौ कुरा हुनैछ ।

नयाँ विश्वासीहरुले साधारणतया सुसमाचारहरुमा आधारित सरल सन्देशहरुबाट सिक्नु राम्रो हो ।